एकात्म मानव दर्शन काव्य रूप में

डॉ ऋषि सिंघल

पंडित जी के एकात्म मानववाद के कुछ प्रमुख तत्व

व्यक्ति-समाज-सृष्टि-परमेश्वर, में प्रकटे सामंजस धार,
आध्यात्मिक, भौतिक दोनों, तत्वों का हो संयुक्त विचार।।
हर मनुष्य को मिले न्यूनतम जीवन स्तर का अधिकार,
इस स्तर के बाद, उत्तरोत्तर समृद्धि, के हों नवचार।।
मितव्ययिता के साथ करें हम, प्रकृति साधनों के उपयोग,
अधिकाधिक उत्पाद करें,हो सबको वितरण,सीमित भोग।
मैल - कुचैले, अनपढ, मूरख, भूखे में है, नारायण,
इनके घाव भरें तब ही, होंगे मूल्यों के संरक्षण।।
'वही खायेगा जो कमायेगा' का सिद्धांत गलत होगा,
क्या रोगी, बूढे की चिंता बिन समाज का हित होगा!!
संस्कृति हो संरक्षित, आगे बने, और गतिशील सजीव,
कुरीतियों के तोडें गढ, और पुष्टें मानवता की नींव।।
"आ नो भद्रा क्रतवो" का सिद्धांत रहा संस्कृति का मूल,
बाहर के सिद्धांतों, तत्वों को भी ढालें, युगानुकूल।।
केन्द्र व्यवस्था ने मानव को बना दिया बस एक मशीन,
जिसमें उसकी सभी विविधताएं हो जाती कुंठित क्षीण।
इन केन्द्रीय व्यवस्थाओं में मानवाधिकार के मूल्य कहां!
अतः विकेन्द्रीकरण,मनुज और संस्कृति के अनुकूल यहां।
छोटे, मंझले, उद्योगों में, मानव की उन्नति का मूल,
बनें स्वावलंबी,मेहनतकश यह चिंतन ही राष्ट्रानुकूल।।
करें प्रकृति का दोहन हम,इस पर हर मानव का अधिकार,
पश्चिम के अंधे विकास ने, किया सृष्टि का बंटाधार।।
अधिकाधिक उपभोग त्याग न्यूनतम बनायें निज आदर्श,
तभी रुकेंगे शोषण, मर्दन, कटुता, "वर्गों के संघर्ष"।।
शाश्वत तत्वों को अपनायें, जो विकास में साधक हों,
लक्ष्मण रेखाओं को लाघें, यदि उन्नति में बाधक हों।।
मन,शरीर और बुद्धि,आत्मा हैं यह चार चरम पुरुषार्थ,
मानव-सृष्टि एक शाश्वतता, नर ही नारायण भावार्थ।।

सब समष्टि के अंगभूत हैं, हैं सबके अधिकार समान,
सारे मानव एक ब्रह्म परमात्मा की, अनुपम संतान।।
इस एकात्मवाद के पथ पर, ही है मानव का कल्याण,
"तेरे सुख में मेरा सुख", और "तेरे दुख में मेरे प्राण"।।

---डा ऋषि कुमार सिंघल
सह आचार्य
भौतिक विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्व विद्यालय
जयपुर